Saarth E-Journal

Saarth E-Journal of Research

E-mail : sarthejournal@gmail.com
www.sarthejournal.com

ISSN NO : 2395-339X
Peer Reviewed
Vol.8 No.5

Impact Factor
Quarterly
Jan-Fb-March2023

उपेन्द्रनाथ अश्क: व्यक्ति चिंतन के शिल्पी

प्रणवकुमार जमसुभाई पटेल

सारांश:

हिन्दी उपन्यास ने शतायु को पार कर दिया है। इस लंबी अवधि में उपन्यास के कार्य और शिल्प में अनेक परिवर्तन एवं विकास हुए हैं। वर्ण्य एवं शिल्प के इन परिवर्तनों के कारण ही हिन्दी उपन्यास प्राणवान होता गया है। अश्क को व्यक्ति चिंतन रचनाकार मानने कारण यही है कि उन्होने सामंती परम्पराओं और मान्यताओं का विरोध किया है। उन्होने समाज कल्याण की बात को व्यक्ति के कल्याण की बात से अलग नहीं किया। उन्होने व्यक्ति जीवन-घटनाओं को प्रमुखता प्रदान की,व्यक्तिगत जीवन-दर्शन को महत्व दिया, व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं का अंकन किया, व्यक्तिगत मनोविज्ञान के आधार पर व्यक्ति का विश्लेषण किया। अश्कने सामाजिक मान्यताओं की तुलना में वैयक्तिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया। उन्होने सामाजिक लक्ष्य को मान्यता न देकर वैयक्तिक जीवन के चित्रण को सर्वोपरि माना।

चाबिरुप शब्द: वैयक्तिक जीवन,परिचय, बहुआयामी प्रतिभा, उपन्यास,

प्रस्तावना एवं परिचय:

पंजाब की उर्वरक सौंधी महकती मिट्टी के समृद्ध इलाके जालंधर ने हिंदी साहित्य को एक ऐसा प्रतिभाशाली सृजनधर्मी दिया जिसने कबीर, निराला, प्रेमचंद की परम्परा को अपनी लेखनी व रचना धर्मिता से अक्षरशः थामते हुए उतरोत्तर बढ़ाने में जीजान की परवाह भी न

की। १४ दिसंबर १९१० को जालन्धर के स्टेशन-मास्टर पण्डित माधोराम के घर दूसरी औलाद के रूप में उपेन्द्रनाथ का जन्म हुआ जिन्हें हिन्दी-उर्दू के गद्य-साहित्य में प्रेमचंदोत्तर उत्कृष्ट कथाकार होने का दर्जा दिया जाता है। ये बात अलग है कि उन्हें वैसे तो कबीर, निराला, प्रेमचंद जैसी फक्कड़-किस्म की साहित्य-साधना का अथक साधक तो माना गया है पर किसी भी स्तर पर उनके जितनी मान्यता नहीं दी गई; उनके तत्कालीन या आगामी साहित्य-साधकों, समीक्षकों, अनुलोचकों या फिर यहाँ तक कि सरल हृदय पाठकों ने भी। 'अश्क' जी बहुमुखी साहित्यिक प्रतिभा के धनी अथक-सतत् लेखक सरस्वती के ऐसे सच्चे साधक, चिंतक और साहित्य शिल्पी रहे, जिन्होंने अपनी अटूट साधना में जीवन की कठिनाइयों को आड़े न आने दिया। ११वर्ष की आयु से ही पंजाबी में तुकबन्दियाँ करने के साथ उनकी यह साधना उर्दू लेखन से बाक़ायदा प्रकाशित होनी आरंभ हुई और फिर हिंदी साहित्य के अमर कथाकार प्रेमचंद की सलाह से १९३२ से हिन्दी साहित्य-सृजन की ओर उनकी अबाध लेखनी उन्मुख हुई। इन्होंने साहित्य की हर विधा पर हिंदी साहित्य को अपना सर्वोत्तम योगदान दिया।

बहुआयामी प्रतिभाः

शुरू से ही उपेन्द्रनाथ की बहु-आयामी प्रतिभा जीवन के विविधतापूर्ण विषयों-व्यावसायों से आकर्षित रही व जीवन में बहुत कुछ कर गुज़रने की प्रबल इच्छुक रही।अश्क के उपन्यासों में व्यक्ति अपने पूर्ण रूप में चित्रित हुआ है। उनका मानना है कि व्यक्ति समाज का एक अभिन्न हिस्सा है जो कभी समाज से कट नहीं सकता। उनकी दृष्टि में व्यक्ति समाज से पूर्णतः कटकर रहे यह संभव नहीं है।वास्तव में वह व्यक्ति और समाज दोनों को एकदूसरे के पूरक मानते है। वह व्यक्ति का हित समाज-कल्याण के लिए और समाज का हित व्यक्ति-कल्याण के लिए मानते है। उनका मानना है कि-

"जीवन तो कूड़े-करकट, धुएँ-धुंद, गर्द-गुबार, कीचड़ और दलदल से अटा पड़ा है। मानव मन इतना सरल नहीं कि देवता हो। वह पासे का सोना नहीं, अष्टधातु का मिश्रण है कि उसके बाहर की उलझनों का अपरिमित विस्तार नहीं, उसके अंतर में बेगिनती स्तर हैं जिनके नीचे ऐसी-ऐसी अंधेरी कंदराएँ हैं जिनकी झांकी मात्र कंपा देने को यथेष्ट है और मैंने सोचा कि किसी पासे के सोने से बने देवता को चित्रित करने के बदले इसी गुण-दोषों के पुतले मानव ही का चित्र क्यों न उकेरा जाए।" (उपन्यासकार अश्क, पृ.६५)

उपेन्द्रनाथ अश्क का साहित्यिक जीवन निरन्तरता पर टिका रहा। जीवन में चाहे कितने भी उतार-चढ़ाव आए लेकिन साहित्य-सृजन की निरंतरता बनी ही रही। बचपन से ही पंजाबी में तुकबंदी का चस्का था ही, पर उस समय कौन जानता था कि इन्हींतुकबंदियों की मानसिक आधारशिला पर साहित्य सृजनशीलता का ऐसा मजबूत गढ़ (क़िला) गढ़ा जाएगा जिसमे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, अनुवादन-सम्पादन, आलोचना जैसी विधाओं से सम्पृक्त साहित्य की कोई विधा भी उनकी कलम से अछूती न रह पाएगी। उर्दू भाषा में 'नवरत्न' और 'औरत की फ़ितरत(१९३३)' के प्रकाशन के बाद १९३२ में अपने

प्रेरक कथाकार मुंशी प्रेम चन्द की प्रेरक-सलाह से हिंदी भाषा के साहित्य-सृजन में जुटे अश्क़ जी ने तन-मन हिन्दी को समर्पित कर दिया, बहुत कुछ हिंदी को दिया और वह भी बिना किसी लोभ-लाभ के, बिना किसी पुरस्कार-सम्मान की आकांक्षा के। जीवन के कटु अनुभवों को सहज स्वीकारते हुए अश्क जी ने साहित्य-सृजन से कोई समझौता नहीं किया। जन्मानस के संघर्षों की प्रत्यक्ष अनुभूतियाँ उनकी सृजनधर्मिता का संबल बनी। अपने जीवन को वाग्देवी सरस्वती को समर्पित ज्ञान व साहित्य-साधना के हर रंग को जीया-भोगा और फिर अपनी रचनाशीलता में उसे उदात्त उद्देश्यों में ढाल कर पुनः सृजित किया। उनके साहित्यिक सरोकार मानवतावादी यथार्थ उद्घाटन से प्रगतिशील उद्देश्यों की पूर्ती-स्थापना में लगातार झूझते दिखाई पड़ते हैं। जिसका प्रमाण उनके उपन्यास "गिरती दीवारें" की भूमिका में सहज ही मिल जाता है। बदलते समाज की रग-रग से वाकिफ़ उनकी अनुभूतियाँ उनके कथा साहित्य में जन-मानस को झकझोरती भी हैं और सचेत भी करती हैं। तभी उपेन्द्रनाथ अश्क सभी विधाओं में लिखने के बावजूद हिन्दी साहित्य में एक प्रतिष्ठित कथाकार के तौर पर ही जाने जाते हैं।

अश्क जी के साहित्यिक जीवन की एक नायाब ख़ूबी रही कि वे समाज की स्वार्थकामी धारा में न तो बहे न कोई समझौता किया, इसके साथ ही मानसिक स्तर पर जनोपयोगी भाव-चेतना का अंश मात्र भी कहीं से मिला नहीं की उसे पूरी आत्मीयता से ग्रहण किया और आजीवन तहे दिल से निभाया। इस बात की पुष्टि भी उनके 'गिरती दीवारें' के लेख से ही जाती है जहाँ प्रोफ़ेसर फ़य्याज़ महमूद के कथन से अपने साहित्यिक मनोमंथन को सही दिशा मिलने की बात स्वीकारना अश्क़ जी की व्यक्तित्व व साहित्यिक ईमानदारी की आतंरिक-बाह्य एकरूपता को दर्शाता है। उन्हें यह कहने में ज़रा भी संकोच नहीं रहता कि 'गिरती दीवारें' से पहले जिस'...कल्पना-लोक में उनका मन-मानस विचरता था उसमें अपने आस-पास का कूड़ा-करकट,भूख-गरीबी, रोग-शोक, गन्दगी-गलाज़त कुछ भी दिखाई न देता था।'(उपेन्द्रनाथ 'अश्क़'; गिरती दीवारें, ले. पाठकों और आलोचकों से, पृ. १०) प्रोफैसर साहब की एक बात से ली गई प्रेरणा के बाद ही कल्पनालोक की वाह-वाही की रचनाशीलता त्याग अश्क जी ने सामाजिक जन-जीवन में विचरते दुःख-संघर्षों को झेलते, कष्टों की दल-दल में फंसे अदना से मानव के बड़े बड़े संघर्षों की अनुभूतियों का यथार्थ लेखन कर इस विषमतापूर्ण समाज को बदलने की ज़रूरत से पाठकों का साक्षात्कार करवाने का रचना धर्म बनाया।

अश्क कि जीवनदृष्टि :

अश्क कि जीवनदृष्टि व्यक्ति चिंतन के आधार पर चलती है। इसीलिए कहा जा सकता है कि प्रेमचंद के उपन्यास-साहित्य के मूल में जो समाज-सत्य, समाज-मंगल अथवा समाज-यथार्थ कि जीवन-दृष्टि रही, वहीं अश्क कि उपन्यास कला को प्रेरित करने वाला व्यक्ति-सत्य, व्यक्ति-हित अथवा व्यक्ति-यथार्थ का दृष्टिकोण माना जाएगा। अश्क ने गिरती दीवारें के प्रारंभ में जिस जोश के साथ चेतन के जीवन के नौ हिस्सों को प्रस्तुत करके एक बृहदाकार उपन्यास शृंखला की योजना बनायी थी वह पूर्ण तो नहीं हो सकी लेकिन पाँच

उपन्यासों में चेतन के जीवन खंड के कुछ भाग को प्रस्तुत किया। गिरती दीवारें के बाद का चेतन, व्यक्ति के और पक्षों को छूने का प्रयास करता है।

अश्क जी के साहित्यिक जीवन की एक नायाब ख़ूबी रही कि वे समाज की स्वार्थकामी धारा में न तो बहे न कोई समझौता किया, इसके साथ ही मानसिक स्तर पर जनोपयोगी भाव-चेतना का अंश मात्र भी कहीं से मिला नहीं की उसे पूरी आत्मीयता से ग्रहण किया और आजीवन तहे दिल से निभाया। इस बात की पुष्टि भी उनके 'गिरती दीवारें' के लेख से ही जाती है जहाँ प्रोफ़ेसर फ़य्याज़ महमूद के कथन से अपने साहित्यिक मनोमंथन को सही दिशा मिलने की बात स्वीकारना अश्क़ जी की व्यक्तित्व व साहित्यिक ईमानदारी की आतंरिक-बाह्य एकरूपता को दर्शाता है। उन्हें यह कहने में ज़रा भी संकोच नहीं रहता कि 'गिरती दीवारें' से पहले जिस'...कल्पना-लोक में उनका मन-मानस विचरता था उसमें अपने आस-पास का कूड़ा-करकट,भूख-गरीबी, रोग-शोक, गन्दगी-गलाज़त कुछ भी दिखाई न देता था।'(उपेन्द्रनाथ 'अश्क़'; गिरती दीवारें, ले. पाठकों और आलोचकों से, पृ. १०) प्रोफैसर साहब की एक बात से ली गई प्रेरणा के बाद ही कल्पनालोक की वाह-वाही की रचनाशीलता त्याग अश्क जी ने सामाजिक जन-जीवन में विचरते दुःख-संघर्षों को झेलते, कष्टों की दल-दल में फंसे अदना से मानव के बड़े बड़े संघर्षों की अनुभूतियों का यथार्थ लेखन कर इस विषमतापूर्ण समाज को बदलने की ज़रूरत से पाठकों का साक्षात्कार करवाने का रचना धर्म बनाया।

समापन :

कोई भी रचनाकार अपने युग और परिवेश की भाव-भंगिमाओं को अपनी रचनाओं में आत्मसात किए बिना रह ही नहीं सकता। अश्क जी भी इस से अछूते न रहे, उनके मन-मानस पर बचपन से ही जो अमिट छवियां अंकित हुई उनमें विशेष जलियांवाले बाग़ की बर्बरतापूर्ण अमानवीय घटना थी जिसका उनकी चेतना पर गहरा प्रभाव पड़ा। तभी अश्क़ जी का साहित्य जन-रंजन न होकर जन-पोषक व गहन सामाजिक समझयुक्त है जो परिवेशगत संदर्भो को बड़ी सूक्ष्मता से आत्मसात करके उनके जनोपयोगी लेखन का आधार बना। उनकी रचनाओं में परिवेशगत विसंगतियों, अन्याय अथवा चालबाजियों,छल-छदम को उघाड़ कर यथार्थ चित्रण सामाजिक चेतनता पैदा करने के महत उद्देश्यों को ले कर चलता है। जिसमें वायवीयता या कपोल कल्पना न होकर ऐसी सामाजिक सच्चाइयां दिन-दैन्य के जीवन से निकल कर आई हैं जिनसे आम-आदमी नित्य-प्रति जूझता दिखाई पड़ता है। ऐसे आदर्शों, आडम्बरों, दोगली नीतियों के सामाजिक खोखलेपन के विरुद्ध मानवोचित जीवन के लिए निरंतर परिवर्तनकामी रही है अश्क़ जी की लेखनी। वस्तुतः उपेन्द्रनाथ अश्क़ हिंदी साहित्य में निम्न मध्यवर्गीय समाज की व्यक्ति-चेतना के प्रतीक माने जाते हैं। इसी वर्ग में विचरते जीवन-यापन के लिए निरंतर संघर्षरत अदना-जन की अनंत समस्याएँ और उन से पगे-पगे हर दिन दो-चार होता एक सामान्य-से किरदार को ही उन्होंने विशेष बनाया, ताकि ऐसे विषमतापूर्ण समाज को बदलने की आकांक्षा हर एक पाठक को उद्वेलित करे जिसमें सभी मनुष्यों को मानवोचित्त जीवन-यापन की सुविधा प्राप्त हो सके। जीवन अनुभवों की पैनी

दृष्टि उनके निजी जीवन के विविधतापूर्ण जीवन-शैली की भी देन हो सकती है। व्यवसाय हो या घर-गृहस्थी अश्क जी को दोनों में ही टिककर रहना शायद मंजूर न रहा। उनकी मानसिक-बौद्धिक उड़ान ने उन्हें नई अनुभूतियों के लिए नए क्षितिज तलाशने को हर क्षण प्रेरित किया। अध्यापन से लेखन, लेखन से सम्पादन, वकील, नाट्य-थियेटर, अभिनेता, फ़िल्मी दुनियां के रास-रंग की अनुभूतियाँ जिसमें जालंधर-पंजाब से बम्बई और फिर बम्बई से इलाहाबाद के सफ़र की अनुभूतियाँ उनके सृजनशील मन की उत्कट चाह थी या जीवन संघर्षों की मजबूरी कह पाना मुश्किल है।

अश्क ने मूलतः ऐसे चरित्रों का निर्माण किया है जो जीवनमूल्यों को समझकर उसको बचाकर समाजगत समस्याओं में से अपने आपको निर्विध् पार करने का प्रयास करते हैं। हम जानते हैं कि अश्क का मानवजगत विशेषकर निम्न मध्यमवर्ग कि समस्याओं से आक्रांत है। अतः अश्क का समग्र ध्यान उस समाज की सड़ी-गली व्यवस्थाओं से जूझने वाले व्यक्ति पर रहे यह स्वाभाविक है। अश्क के व्यसक्ति चिंतन के पक्ष को देखकर यहीं सुर निकलता है कि उन्होने अपने चरित्रों को शिल्पी की बारीक दृष्टि से तराशा है, जिसकी एक-एक रेखाओं से उसकी संघर्षशीलता का प्रमाण दृष्टिगोचर होता है जो अपने क्षेत्र में पूर्ण बनने की कोशिश में हरदम हरपल संघर्ष कर रहा है।

संदर्भ सूची :

1. उपेन्द्रनाथ 'अश्क़'; गिरती दीवारें, ले. पाठकों और आलोचकों से।
2. उपन्यासकार अश्क।
3. उपेन्द्रनाथ 'अश्क'- पच्चीस श्रेष्ठ एकांकी।
4. डॉ. जगदीशचंद माथुर- नाटककार अश्क।
5. डॉ. विमल भास्कर, हिन्दी में सामस्या साहित्य।
6. डॉ. उमाशंकर सिंह समस्या नाटककार 'अश्क'।
7. डॉ. एम.के. गाडगिल, हिन्दी एकांकियों में सामा. जीवन की अभिव्यक्ति।

प्रणवकुमार जमसुभाई पटेल